भगतसिंह ने कहा

"भारतीय रिपब्लिक के नौजवानो, नहीं सिपाहियो, कतारबद्ध हो जाओ। आराम के साथ न खड़े रहो और न ही निरर्थक कदमताल किये जाओ। लम्बी दरिद्रता को, जो तुम्हें नाकारा कर रही है, सदा के लिए उतार फेंको। तुम्हारा बहुत ही नेक मिशन है। देश के हर कोने और हर दिशा में बिखर जाओ और भावी क्रान्ति के लिए, जिसका आना निश्चय है, लोगों को तैयार करो। फर्ज के बिगुल की आवाज सुनो। वैसे ही खाली जिन्दगी न गवाओ। बढ़ो तुम्हारी जिन्दगी का हर पल इस तरह के तरीके और तरतीब ढूंढने में लगना चाहिए, कि कैसे अपनी पुरातन धरती की आंखों में ज्वाला जागे और यह एक लम्बी अंगड़ाई लेकर जाग उठे। ...तब एक भयानक भूचाल आयेगा, जो बड़े धमाके से गलत चीजों को नष्ट कर देगा और साम्राज्यवाद के महल को कुचलकर धूल में मिला देगा और यह तबाही महान होगी।"

(हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन के घोषणापत्र से)

एक अपील

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' सारे देश में चल रहे वैकल्पिक मीडिया के प्रयासों की एक कड़ी है। हम सत्ता प्रतिष्ठानों, फण्डिंग एजेंसियों, पूंजीवादी घरानों एवं चुनावी राजनीतिक दलों से किसी भी रूप में आर्थिक सहयोग लेना घोर अनर्थकारी मानते हैं। जनता का वैकल्पिक मीडिया सिर्फ जन संसाधनों के बूते खड़ा किया जाना चाहिए—हमारी यह दृढ़ मान्यता है।

अतः हम अपने सभी पाठकों- शुभचिन्तकों-सहयोगियों से अपील करते हैं कि वे अपनी ओर से अधिकतम सम्भव आर्थिक सहयोग भेजकर परिवर्तन के इस हथियार को मजबूती प्रदान करें।

अपरिहार्य बाध्यताओं के चलते 'आह्वान' का अक्टूबर-दिसम्बर 2000 अंक हमें स्थगित करना पड़ा। पाठकों को हुई परेशानी के लिए हमें खेद है। हमारी कोशिश होगी कि आगे ऐसा न हो।—सम्पादक

पाठक मंच

भावनाओं को जगाने में सक्षम

'आह्वान' का जुलाई-सितम्बर 2000 अंक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। पत्रिका के अध्ययन के पश्चात कुछ नयी भावनाओं का जन्म हुआ। यूं तो सभी लेखों में सराहनीय मेहनत की गयी है किन्तु मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित बेर्टोल्ट ब्रेष्ट की कविताओं ने किया। मैं यह आग्रह करना चाहूंगा कि इस प्रकार की कविताओं का पैमाना थोड़ा और बढ़ाया जाये क्योंकि ये कविताएं छात्रों की पस्त होती भावनाओं में नयी विचारधाराओं का समावेश कराती हैं।

अमित शर्मा, रामजस कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आग आंखों में जलेगी तो उजाले होंगे

'आह्वान' के अंक बराबर मिल रहे हैं। समकालीन चुनौतियों के सन्दर्भ में यह पत्रिका निश्चय ही युवा पीढ़ी को क्रान्तिकारी दिशा देने का बड़ा कार्य कर रही है।

आपके मिशनरी भाव की संगति के लिए एक शेर :

और दिन कितने अंधेरों के हवाले होंगे
आग आंखों में जलेगी तो उजाले होंगे।

रामकुमार कृषक
संपादक 'अलाव', सादतपुर, दिल्ली

शासक वर्ग आत्मघाती मार्ग पर

पाश के जन्म दिवस (10 सितम्बर) पर जालन्धर में आयोजित यादगारी समारोह में लगी पुस्तक प्रदर्शनी के स्टाल से 'आह्वान' का जुलाई-सितम्बर 2000 अंक खरीदा और पढ़ा।

आवरण पर छपे चित्र का ब्यौरा भी पत्रिका में देना चाहिए। जाफरी साहब की कविता "कौन आजाद हुआ..." से स्पष्ट है कि चोर और रखवाले की मिलीभगत थी।

सम्पादकीय पढ़ा। शासक वर्ग अपनी असीम शक्ति से भी देश में उठने वाले भावी जनज्वार का सामना नहीं कर सकेगा। अभिनव सिन्हा ने लेख में लोकतंत्र के बुनियादी हक पर क्रूर हमले की पोल खोल दी है। सीटें घटाना छात्रों की बुद्धि-विवेक को कुन्द करना व जनान्दोलनों पर लाठी-गोली चलाना शासक वर्ग को आत्मघाती मार्ग पर ले जायेगा। ब्रेष्ट की कविता मार्गदर्शकों का मार्गदर्शन करती है और उनकी अन्य लघु कविताएं भी छात्रों के मनोबल को बढ़ाती हैं। चन्द्रकान्त देवताले की कविता जनमानस को जागृत करती है और अपनी संघर्षशक्ति का क्रान्तिकारी उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

स्वयंसेवी संगठनों पर विशेष लेख भी पढ़ा। शासक वर्ग की पिशाची जुमलेबाजी में फंसने की जरूरत नहीं। बुर्जुआ समाज अपने वजन से खुद ही पिसता चला जायेगा। दान को जब धार्मिक रंगत दे दी जाती है तो यह खतरनाक अभिशाप होकर रह जाता है। दान से मजदूर वर्ग का शोषण और बढ़ता है।

धर्मसिंह गुलाटी
फिरनी रोड, संगरूर (पंजाब)

चन्द अशआर

हम हवाओं से निकलकर सड़कों पर दंगे करें
पड़ रही दंगों की आदत किस तरफ ले जायेगी।

लाज ललनी की लुटे जब कोतवाली के निकट
बोलिए ऐसी हिफाजत किस तरफ ले जायेगी।

रात को दंगे करें और सुबह को आंसू बहाएं।
नेताओं की ये सियासत किस तरफ ले जायेगी।

बांटते हैं रेवड़ी जो सिर्फ अपनों के लिए
अंधों की नजरे इनायत किस तरफ ले जायेगी।

रोशनी के पांव में डालते हैं जो बेड़ियां
ऐसे लोगों की निजामत किस तरफ ले जायेगी।

मनीषा, कक्षा-8, ग्राम-भदाना, सोनीपत

कृपया 'आह्वान' की सहयोगी पत्रिका और संस्थाओं के नये पते दर्ज कर लें :

पाठकों-सहयोगियों से अपील है कि वे संबंधित पत्रिका या संस्था से उसी के पते पर स्वतंत्र पत्र-व्यवहार करें।

दायित्वबोध, 81, समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार फेज-एक, दिल्ली-110091
फोन : (011) 2711136 email : dayitvabodh@rediffmail.com

राहुल फाउण्डेशन, 69, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006
फोन : (0522) 383928 email : rahulfoundation@rediffmail.com

जनचेतना, डी-68, गोमती मोटर्स के सामने, निरालानगर, लखनऊ-226020
फोन : (0522) 788932 email : janchetna@rediffmail.com